गणेश अथर्वशीर्ष

©Heygreetings.in

©Heygreetings.in

ॐ नमस्ते गणपतये।
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि
त्वमेव केवलं कर्ताऽ सि
त्वमेव केवलं धर्ताऽसि
त्वमेव केवलं हर्ताऽसि
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि
त्व साक्षादात्माऽसि नित्यम्।।
1।।

Read Online

©Heygreetings.in

अव त्व मां। अव वक्तारं।
अव श्रोतारं। अव दातारं।
अव धातारं। अवानूचानमव
शिष्यं।
अव पश्चातात। अव पुरस्तात।
अवोत्तरात्तात। अव
दक्षिणात्तात्।
अवचोर्ध्वात्तात्।।
अवाधरात्तात्।।
सर्वतो मां पाहि-पाहि समंतात्।।
3।।

Read Online

©Heygreetings.in

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः।
त्वमानंदमसयस्त्वं ब्रह्ममयः।
त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोऽषि।
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्माषि।
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽषि।।
4।।

Read Online

©Heygreetings.in

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते।
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि
लयमेष्यति।
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो
नभः।
त्वं चत्वारिकाकूपदानि।।5।।

Read Online

©Heygreetings.in

त्वं गुणत्रयातीतः
त्वमवस्थात्रयातीतः।
त्वं देहत्रयातीतः। त्वं
कालत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यं।
त्वं शक्तित्रयात्मकः।
त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं।
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं
रूद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं
वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं
ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम्।।6।।

Read Online

©Heygreetings.in

गणादि पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं
तदनंतरं।
अनुस्वारः परतरः।
अर्धेन्दुलसितं।
तारेण ऋद्धं। एतत्तव
मनुस्वरूपं।
गकारः पूर्वरूपं। अकारो
मध्यमरूपं।
अनुस्वारश्चान्त्यरूपं।
बिन्दुरूत्तररूपं।
नादः संधानं। सँ हितासंधिः
सैषा गणेश विद्या। गणकऋषिः
निचृद्गायत्रीच्छंदः।
गणपतिर्देवता।
ॐ गं गणपतये नमः।।7।।

Read Online

©Heygreetings.in

एकदंताय विद्महे।
वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दंती प्रचोदयात।।8।।

Read Online

©Heygreetings.in

एकदंतं चतुर्हस्तं
पाशमंकुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं
मूषकध्वजम्।
रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं
रक्तवाससम्।
रक्तगंधाऽनुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः
सुपुजितम्।।
भक्तानुकंपिनं देवं
जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृते
पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी
योगिनां वरः।।9।।

Read Online

©Heygreetings.in

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये।
नमः प्रमथपतये।
नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय।
विघ्ननाशिने शिवसुताय।
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।10।।

Read Online